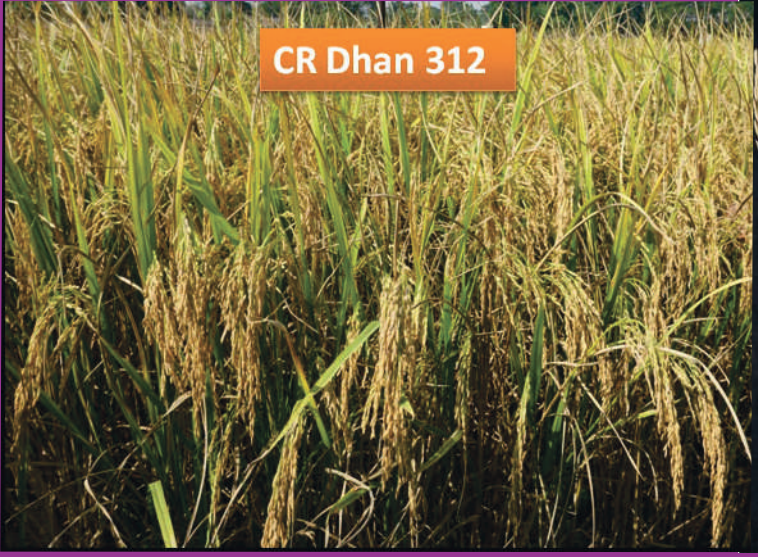

चावल की किस्म सीआर धान 312 के लिए उत्पादन तकनीक

एम. के. कर , एल. के. बोस, जे. एन. रेड्डी, एस. के. प्रधान, एस. के. दास, एम. चक्रवर्ती, एस. सरकार, एम. अजहरुद्दीन, जे. मेहेर, ए. के. मुखर्जी, पी. सी. रथ, एस. लेंका, एस. डी. महापात्रा, एम. जेना, जी. गुरु प्रसन्ना पांडी, एस. साहा और एन. एन. जांभुलकर

चावल की किस्म सीआर धान 312 (आईईटी25997) आईसीएआर-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (एनआरआरआई), कटक में मेल स्टेरिलिटी की सुविधा से आवर्तक चयन जनसंख्या पद्धति से विकसित की गई है। इस किस्म को 'फसल मानकों, अधिसूचना और कृषि फसलों के लिए किस्मों का विमोचन' की केंद्रीय उप-समिति द्वारा मध्यम कालावधि के तहत महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ के सिंचित क्षेत्रों के लिए 2020 में विमोचित और अधिसूचित किया गया है। यह सिंचित भूमि में खेती के लिए उपयुक्त है। यह एक अर्ध-बौना प्रकार का पौधा है जो 118-120 दिनों में पकता है। इस किस्म में अच्छी कुटाई (हलिंग) और छिलका हटाना (मिलिंग) के साथ कम टूटने वाले मध्यम पतले दाने के साथ वांछनीय क्षार प्रसार मूल्य होता है। यह किस्म लीफ ब्लास्ट, नेक ब्लास्ट और राइस टुंग्रो वायरस के लिए मध्यम प्रतिरोधी है। इस किस्म में अधिक उर्वरक अनुप्रयोग दक्षता हैं। इस किस्म को सिंचित पारिस्थितिकी में नवीन किस्म के स्थान पर प्रतिस्थापित कर सकते हैं जो सामान्यतः 6.4 टन/हेक्टेयर की उपज प्रदान करती है।

अधिक उपज के लिए एकमुश्त पद्धति

बीज का चयन

- विश्वसनीय स्रोत से बीज प्राप्त करके 80% से अधिक अंकुरण के साथ आनुवंशिक शुद्धता सुनिश्चित कीजिए।

- स्वस्थ फसल से अच्छी तरह से भरे हुए और कीट और रोग से मुक्त बीजों का चयन कीजिए।

भूमि की स्थिति

- सीआर धान 312 सिंचित भूमि के लिए उपयुक्त है। इसे खरीफ और रबी दोनों मौसम में उगाया जा सकता है।

सीडबेड की तैयारी

- खरीफ फसल के लिए जून में और रबी फसल के लिए दिसंबर में जल स्रोत के पास उपयुक्त भूमि का चयन कीजिए।
- खेत की 3-4 बार जुताई कीजिए और खेत को अच्छी तरह समतल कीजिए। नर्सरी में पर्याप्त मात्रा में गोबर /कम्पोस्ट खाद डालिए।
- मिट्टी ऊँची करके एक मीटर चौड़ाई ओर किसी भी सुविधाजनक लंबाई की चारों ओर 50 सेमी का अंतर रखते हुए सीडबेड तैयार कीजिए। एक सीडबेड से प्राप्त पौध से दस गुने क्षेत्रफल के खेत में रोपाई हो सकती है।
- अंकुरित बीजों को समतल और गीले नर्सरी बेड पर बुवाई कीजिए।

बीज दर और बीज उपचार

- रोपाई के लिए प्रति हेक्टर 30-40 किलो बीज की आवश्यकता होती है।
- बुवाई से पहले बीजों को एग्रोसन जीएन या सेरेसन या कार्बेन्डाजिम @ 2 ग्राम/किलोग्राम के दर से उपचारित कीजिए।
- गीले सीडबेड में बीज को अंकुरण के लिए भिगोने के समय बीजोपचार किया जा सकता है।

बुवाई का समय

- खरीफ/गीला मौसम: नर्सरी बेड में जून के पहले सप्ताह में बुवाई कीजिए।
- रबी/शुष्क मौसम: नवंबर के अंत से दिसंबर के मध्य तक नर्सरी बेड में बुवाई कीजिए।

नर्सरी प्रबंधन

- बीज भिगोने के 24 घंटे के बाद पानी निकाल दीजिए और बीज को एक बोरी में अंकुरित होने के लिए रख दीजिए। अंकुरित बीजों को नर्सरी बेड में बोयें और बेड में कुछ दिनों तक नमी बनाए रखिए।
- जब पौध लगभग एक इंच की ऊंचाई तक पहुंच जाए तो नर्सरी में पानी की एक उथली परत बनाए रखिए। पौध को नर्सरी से उखाड़ने से 7 दिन पहले आवश्यक मात्रा में उर्वरकों का ऊपरी प्रयोग कीजिए।

मुख्य खेत की तैयारी

- इस किस्म को उगाने के लिए सिंचित मध्यम भूमि उपयुक्त होती है।
- ट्रैक्टर के हल से जमीन को अच्छी तरह तैयार कीजिए।
- पहली जुताई के दौरान 5 टन/ हेक्टेयर के दर से गोबर /कम्पोस्ट खाद डालिए।

- बेहतर खरपतवार नियंत्रण और पोषक तत्वों की उपलब्धता के लिए खेत को दो बार कीचडदार कीजिए। शुरुआती और अंतिम जुताई के बीच कम से कम 7-8 दिनों का अंतराल दीजिए ।
- पूरे खेत में एक समान जल स्तर बनाए रखने के लिए पाटी चलाकर खेत को समतल कीजिए।

रोपाई और फसल स्थापना

- खरीफ मौसम में मध्य जुलाई और रबी मौसम में मध्य जनवरी तक 20 सेमी × 15 सेमी की दूरी के साथ रोपाई कीजिए।
- कीचडदार किए हुए खेत में 25-30 दिन पुराने पौध को 2-3 पौध/ पूंजा के दर से रोपाई करनी चाहिए। रोपाई के 10 दिन बाद खाली जगह को भर दीजिए।

उर्वरक प्रबंधन

- नाइट्रोजन फॉस्फोरस पोटाश @ 80:40:40 किग्रा/ हेक्टेयर के दर से प्रयोग कीजिए। नाइट्रोजन की आधी मात्रा, फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा को आधारीय खुराक के रूप में डालिए और शेष नाइट्रोजन को दो बराबर भागों में बाटकर रोपाई के 3 सप्ताह बाद और बाली निकलते समय डालिए।
- रेतीली मिट्टी में पोटाश की दो-तिहाई मात्रा आधारीय खुराक के रूप में डालिए और शेष एक तिहाई पोटाश की मात्रा को बाली निकलते समय डालिए।

खरपतवार प्रबंधन

- व्यापक खरपतवार नियंत्रण के लिए बिना खड़े पानी के संतृप्त मिट्टी में बेनसल्फ्यूरॉन मिथाईल + प्रीटिलाक्लोर 60+600 ग्राम / हेक्टेयर (जीआर इरेज़ स्ट्रॉन्ग @ 10 किग्रा / हेक्टेयर) 50 किलोग्राम रेत के साथ मिलाकर रोपाई के 3-7 दिनों के बाद डालें।
- यदि रोपाई के प्रारंभिक चरण में घास और नरकट अधिक हैं, तो बिस्पायरीबैक सोडियम को 30 ग्राम / हेक्टेयर (नॉमिनी गोल्ड @ 300 मिली / हेक्टेयर) के दर से 300 लीटर पानी / हेक्टेयर के साथ मिलाकर रोपाई के 10-12 दिनों के बाद छिड़काव कीजिए।

रोग एवं कीट का प्रबंधन

रोग प्रबंधन

- यदि बैक्टीरियल ब्लाइट दिखाई देता है, तो खेत से पानी निकाल दीजिए, 20 किग्रा/ हेक्टेयर की दर से पोटाश उर्वरक की अतिरिक्त खुराक डालें और नाइट्रोजन उर्वरक के शेष प्रयोग में विलम्ब करें।
- बैक्टीरियल ब्लाइट के स्थानिक क्षेत्रों में बीज को प्लांटोमाइसिन 10 ग्राम या स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 1.5 ग्राम और कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 25 ग्राम के घोल में 10 लीटर पानी में भिगो दें।
- बैक्टीरियल ब्लाइट को नियंत्रित करने के लिए प्लांटोमाइसिन (1 ग्राम) + कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (2.5 ग्राम) प्रति लीटर पानी मे मिलाकर छिडकाव कीजिए।

कीट प्रबंधन

- कीटों के हमलों की नियमित निगरानी के साथ-साथ आवश्यकता के अनुसार कीटनाशक का प्रयोग करके फसल को कीटों से बचाएं।
- कीटनाशकों का छिड़काव करते समय 500 लीटर पानी/हेक्टेयर का प्रयोग कीजिए।
- रोग और कीट के हमले को कम करने के लिए खेत और खेत के बांध को साफ रखिए।
- रबी मौसम के दौरान, पौधे के विकास के प्रारंभिक चरण में पीला तना छेदक एक प्रमुख कीट है।
- रोपाई से पहले बेहन की जड़ों को क्लोरोपाइरीफॉस घोल @ 2 मिली/लीटर की दर से पानी में रात भर डुबोकर रखें।
- तना छेदक और अन्य कीटों की घटनाओं को कम करने के लिए रोपाई के 30 दिनों के बाद क्लोरेंट्रानिलिप्रोल ग्रेन्यूल्स @ 10 किग्रा / हेक्टेयर की दर से मिट्टी में डालें।
- पीला तना छेदक को नियंत्रित करने के लिए क्लोरेंट्रानिलिप्रोल (फेर्टेरा 0.4% जीआर) @ 10 किग्रा / हेक्टेयर का उपयोग निर्गमन होने पर भी बहुत प्रभावी है।
- जब कीट आर्थिक दहलीज स्तर को पार कर जाए, तो भूरा पौंध माहु, सफ़ेद पीठवाला माहू, पत्ता मोडक आदि के लिए इमिडाक्लोप्रिड @ 0.5 मिली/लीटर की दर से या ट्राइफ्लायमेज़ोपाइरिम @ 0.5 मिली/ली या क्लोरपाइरीफॉस का @ 2 मिली/ली की दर से छिडकाव कीजिए।

कटाई

- फूल लगने के 25-30 दिन बाद जब बालियों में 80% तक दाने पक जाए तो फसल की कटाई कीजिए।
- भंडारण से पहले दौनी, फ़टकन और उचित सुखाने का काम किया जाना चाहिए
- कटाई के तुरंत बाद दौनी कीजिए और भंडारण के लिए 12% नमी आने सुखाएं।

चावल की किस्म सीआर धान 312 के लिए उत्पादन तकनीक

एनआरआरआई तकनीकी बुलेटिन-**188**
संपादन: राहुल त्रिपाठी एवं पी. सी. रथ
हिंदी अनुवाद एवं टाइपिंग: एन. एन. जांभुलकर
सर्वाधिकार सुरक्षित, भाकृअनुप-एनआरआरआई, **अप्रैल** 2022

निदेशक–राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक–753006 (ओडिशा) द्वारा प्रकाशित,
प्रिंट–टैक ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, भुवनेश्वर–751024 द्वारा मुद्रित।